कनीज़ाने सैय्यदा व ज़ैनब सलामुल्लाहि अलैइहुमा से

मौलाना हसन ज़फ़र नक़वी इजतेहादी साहिब (कराची)

अज़ादारी सैय्यदुश्शोहदा के फ़रोग़ में आपका हिस्सा मर्दों से कम नहीं है बल्कि बाज़ जगहों पर आप मर्दों से भी पेश–पेश नज़र आती हैं।

आपने कभी सोचा कि मर्दों से ज़ियादा आप नसलों की ज़हनी और जिसमानी परवरिश की ज़िम्मेदार है? हर बच्चा माँ से इसी लिए ज़ियादा मानूस होता है कि वह तरबियत के इब्तेदाई दौर का बड़ा हिस्सा माँ के साथ गुज़ारता है, घर में होने वाली तमाम बातों का बराहे रास्त असर लेता है और यह तमाम बातें उसके दिल पर मरते दम तक अपने नक़्श बरक़रार रखती हैं। आप जो कुछ भी अपनी औलाद को देंगी वही आपकी औलाद आगे बढ़ायेगी। इन्सान पर मज़हब का उभरने वाला नक़्श माँ की आग़ोश में सब्त होता है।

इसी लिए हम देखते हैं कि वह शादी की रुसूमात हों या अज़ादारी की, किसी के सोएम, चहल्लुम का मसला हो या मीलाद व मजलिस का, ख़वातीन के नुक़ूश व असरात इतने गहरे हैं कि मर्द इन मामलात में भी ख़वातीन की तक़लीद करते हैं जो सरासर बातिल हैं। आज हमारे मुआशरे में दो शरऐं राएज हैं एक शर–ए–मुहम्मदी और दूसरी शर–ए–निस्वाँ। यानी ख़वातीन की अपनी ईजाद की हुई शरअ कि मसलन सोएम किस दिन होना चाहिए और चहल्लुम किस दिन होना चाहिए, मेंहदी माँझा के बग़ैर शादी का तसव्वुर अधूरा है, मर्द ने सेहरा ही न बाँधा तो निकाह कैसे होगा, गुज़शता साल तबर्रुक में हलीम बाँटा गया था अगर इस बार न बाँटा तो मौला नाराज़ हो जाएंगे। फलाँ इमाम बारगाह पर मन्नत जल्दी पूरी होती है और फलाँ जगह के अलम पर मुराद जल्दी आती है, तो क्या सारी इमाम बारगाहें इमाम हुसैन (अ0) की नहीं हैं और क्या सारे अलम हज़रत अब्बास अलमबरदार से मन्सूब नहीं हैं, नजफ, मशहद, कर्बला और दीगर मज़ाराते मासूमीन को छोड़कर जिनकी ख़ास फ़ज़ीलतें रिवायात में वारिद हुई है तमाम इमाम बारगाहें, तमाम अलम, तमाम ज़ियारात, मुक़द्दस और मुतबर्रिक हैं।

अपनी मोहतरम माओं बहनों से इन्तिहाई माज़रत के साथ इतनी गुज़ारिश है कि अपनी शरअ तशकील न दें बल्कि शर–ए–मुहम्मदी और फ़िक़्हे जाफरी को समझने की कोशिश करें। आपकी ज़ईफुल एतक़ादी और तवह्हुम परस्ती का नतीजा यह निकलता है कि मफ़ाद परस्त लोग पहले आप पर ही हाथ डालते हैं और जो बात भी मशहूर करवानी हो चन्द ख़वातीन तक उसका पहुँचा देना काफ़ी होता है। बाज़ औक़ात महज़ मजमा इकटठा करने की ख़ातिर अहले बैत (अ0) के नाम को आड़ बनाकर आपको इस्तेअ्माल कर लिया जाता है।

ख़्वाबों के सिलसिले को ही ले लीजीये रोज़ कोई न कोई ख़्वाब देखता है कि उसे बशारत हुई है कि यह करो, किसी को बशारत हुई है वह करो। बात साफ और वाज़ेह है किसी भी आम इन्सान का ख़्वाब दूसरे इन्सान के लिए हुज्जत नही है यह कोई मासूम का ख़्वाब नहीं है

कि इस पर हर शख़्स अमल अन्जाम दे। आपने ख़्वाब देखा है आप ज़िम्मेदार हैं, आपका ख़्वाब हुक्मे खुदा या वही–ए–इलाही नही है जिस पर अमल करना दूसरों पर भी वाजिब हो।

हमारा मज़हब ख़्वाबों की दुनिया का मज़हब नही है यह हक़ीक़ी दुनिया में अमल के लिए आया है। तो आप ऐ कनीज़ाने जनाब सैय्यदा (स0) व जनाब ज़ैनब!(अ0) खुदा रा अपने अज़ीम मक़ाम को पहचानें, आपको अपनी आग़ोश में इमाम के सिपाहियों की तरबियत करना है इस लिए आपकी खुद अपनी तरबियत और अमली सलाहियत इतनी होनी चाहिए कि आप दूसरों को जहल और गुमराही से बाहर निकाल सकें।

कर्बला में मौजूद बीबियों ने किस तरह अपने राज दुलारों को मौत के हवाले कर दिया था और उनके बच्चे भी किस तरह खुशी–खुशी शहादत हासिल करने के लिए तीरों और तलवारों पर टूट पड़े थे, यह जज़्बा हुसैन (अ0) की हक़ीक़ी मारफत की वजह से पैदा हुआ था।

आज भी मज़हब व मिल्लत को ऐसी ही आग़ोश की ज़रूरत है जो अपनी गोद में मुख़्तार सिफत बच्चों की परवरिश करें, उन्हें तवहहुम परस्त माहोल में पालने के बजाए मुजाहिद बनने का दर्स दें, उन्हें लोरियों में शहीदों और दिलेरों की दास्तानें सुनायें ताकि जब दीन पर वक़्त पड़े तो यही दिलेर माओं की आग़ोश के परवरदा बच्चे क़हरे इलाही बनकर दुश्मन पर टूट पड़ें और कर्बला की माओं की तरह उनकी माएँ भी खुदा की बारगाह में सुरखुरू हो जायें।

ऐ कनीज़ान ज़ेहरा (स0) और पैरवान ज़ैनब व उम्मे कुलसूम! (अ0) यही वह वक़्त है जब आपको कई क़दम आगे बढ़कर काम करना होगा। औरत की बेहतरीन मस्जिद उसका घर है, औरत की जन्नत उसका नशेमन है, औरत की ज़ीनत व ज़ैन उसका शौहर और उसके बच्चे हैं, लेकिन जब भी क़ौम व मज़हब पर वक़्त पड़ा मर्दों का हौसला बढ़ाने के लिए उनकी ग़ैरत व हमिय्यत को जगाने के लिए इनही ख़वातीन ने मिसाली किरदार अदा किया है।

तारीख़ के हर–हर मोड़ पर चाहे नुबुवत की इमदाद का मसला हो, चाहे इमामत के हक़ के दिफाअ का मामला हो, चाहे दरबार हो, चाहे बाज़ार हर जगह यही कमज़ोर औरत बातिल की शिकस्त का सामान बन गई, यही औरत एक ख़ातूने ख़ाना से मर्दे मैदान में तबदील हो गई।

आज आपको अपना किरदार तय करना पड़ेगा। कैसी ज़िन्दगी गुज़ारी जाए? ज़मीन पर रेंगने वाले करोड़ों अरबों कीड़ों की मानिनद जो दुनिया में आए, माद्दी ज़रूरतों को पूरा किया और चले गये। नाम व निशान तक मिट गया, जैसे कि बेशुमार लोग ऐसी ही ज़िन्दगी की आरज़ू करते हैं जो सिर्फ माद्दी ख़्वाहिशात की तकमील तक महदूद होती है और उन ख़्वाहिशात की तकमील को वह ज़िन्दगी का हासिल जानते हैं या आप ऐसी ज़िन्दगी चाहती हैं जो कभी न ख़त्म होने वाली हो यानी हयाते अबदी।

यक़ीनन हर ज़ी अक़्ल ऐसी ही ज़िन्दगी की ख़्वाहिश करेगा जो तूलानी हो। तो यह हयाते अबदी जो दुनिया व आख़िरत में इज़्ज़त व सरबुलन्दी लिए हुए है हर इन्सान को हासिल नही होती है, यह चन्द ही खुशक़िस्मत होते हैं जो हर दौर में हासिल कर पाते हैं और इस हयाते अबदी को हासिल करने के लिए बहुत क़ुर्बानियाँ भी देना पड़ती हैं। कर्बला की ख़वातीन की मिसाल आपके सामने है, उन ख़वातीन ने गोद के पालों को कुर्बान किया, बेसरो सामानी के आलम में क़ैद व बन्द की तकलीफें झेलीं मगर क़यामत तक के लिये ज़िन्दा जावेद हो गयीं। कल दीन की नुसरत के जुर्म में उनके सर बेचादर किये गये थे मगर आज सारी इन्सानियत उनका नाम आते ही सर झुका लेती है।